रात्री क्लास ओम्शान्ति 6-10-67

बच्चें के सामने कौन बैठे हैं? कोई साधु हैं, सन्त हैं, देखने में ही ऐसा आता हैं दूसरा बाप बैठे हैं। कोई ठिकाना मंदिर भी नहीं हैं। चित्र रखें है जिसको कोई भी नहीं समझ सक्ते। सब कहते है बाबा बाबा। दिल में समझते हैं बाप दादा। कहने बाबा कह पुकारेंगे। पत्र जब लिखते होतो लिखते हो शिव बाबा केअर आफ- ब्रहमा। वास्तव में प्रजापिता ब्रहमा कुमारियाँ अक्षर लिखना हैं। प्रजापिता अक्षर जरूर डालना हैं। ब्रहमा भी माताओं का नाम हैं। तो जरूर ब्रहमा कहने से कामन बात हो जाती है। तुम्हारा हर जगह प्रजापिता, अक्षर जरूर डालना हैं। फिर ब्रहमा के चित्र पर कुछ कहेंगें नहीं। कहेंगे प्रजापिता ब्रहमा तो सूक्ष्म वतन में हो न सके। पर्चे आद छपवाते हो तो प्रजापिता अक्षर जरूर डालो। भूलो मत। बुधि कहती है सूक्ष्म वतन में प्रजापिता ब्रहमा हो न सके। प्रजा तो यहां होती हैं। तुम समझाये सकते हो प्रजापिता ब्रहमा यहां का हैं। साधारण हैं। बाप पहले भी बाप ने कहा है मैं साधारण तन में आता हूं। इनके बहुत जन्मों को मैं जानता हूं। यह नहीं जानते। जो भी लिटरेचर वा चित्र आद छपवाते हो प्रजापिता अक्षर जरूर डालो। जगह न हो तो पी० पी० जरूर लिखो। ब्रहमा द्वारा बाप स्थापना कर रहे है। ब्राहमणों को बैठ राजयोग सिखलाते हैं। मनुष्य जो कर्म करते हैं उसका फल दूसरे जन्म में मिलता है। तुम्हारा दूसरा जन्म होना है सतयुग में। तुम सतयुग लिए पढ़ते हो, तुम से पूछते है कैसे मानें। अरे आते ही है पुरुषोतम संगम पर। पुरुषोतम अक्षर भी जरूर डालना है। तो मनुष्य समझेंगें पुरुषोतम संगम युग पर हो पुरुषोतम बनते हैं। बच्चों को यही बुधि में है हम प्रजापिता ब्रहमा के सन्तान हैं। वह बाबा, वह दादा। कहीं2 छोटा बाबा, बड़ा बाबा भी कहते हैं। अब यह तो दोनो इकठ्ठे हैं। बाप कहते है मैं से वर्सा नहीं मिलता है। वर्सा मिलता हैं बाप से। जो जास्ती याद करेंगें उनके विकर्म विनाश होंगे। और फिर सर्विस भी करनी है। राजा बनना हैं। इसलिए प्रजा भी बनानी है। सर्विस पर निकल आप समान बनाना है। सबको रास्ता बताना यही धंधा करना हैं। तुम हो रूहानी बच्चें सब को रास्ता बताते हो। इन आंखों से आत्मा देखती हैं। यह मनुष्य समझते तो समझ जाये कि हम आत्मा ही पढ़ानी बनी है। हम आत्मा ही यह करते हैं। शिव जयन्ती होती है तो जरूर कोई में आवेंगा। नहीं तो जयन्ती कैसे मनावेंगे। शिव का जन्म दिन कैसे होता है। यह कोई नहीं जानते हैं। शिवरात्री का अर्थ कोई नहीं जानते हैं। कृष्ण की जयन्ती मनाते हैं। परन्तु समझते नहीं हैं। दिखाते है आंठवां गर्भ हुआ। वह तो मां बाप बहुत विकारी हो गये। इन से जन्म तो हो न सके। यह सब हैं दन्तकथाएं। व्यास भगवान कोई बड़ा बूढ़ा था कैसे नावेल्स बैठ बनाई हैं। होता कुछ नहीं हैं। यह सब आखाणीयां हैं। वह सब हैं भक्ति मार्ग के। यहां तुम जानते हो बाप राजयोग सिखाते हैं। शिव जयन्ती का किसको भी पता नहीं हैं। इसलिए भूलते हैं। कहते हैं सवृत! अरे तुम बाप के बच्चें नहीं हो? बाबा बाबा कह पुकारते हो ना। इन सब से पूछो क्या सिखाते हैं। कृष्ण बैठ पढ़ावेंगे फिर सारे दुनिया के मनुष्य आ जाये कृष्ण को देखने। गीता का कृष्ण भगवान तो मुख्य है ना। ढेर मनुष्य आ जायें फिर कब कोई मुश्किल भी देख न सके। उन में तो बहुत आकर्षण शक्ति हैं। कृष्ण और राधे दोनो को इकठ्ठा दिखाते हैं। फिर सिर्फ कृष्ण को झुलाते हैं। राधे को क्यों नहीं। तुम अभी समझते हो दोनो अलग2 राजधानी के प्रिन्स-प्रिन्सेज है। फिर आपस में मिलते हैं। वह बड़े घर के हैं, वह छोटे घर के। फिर सगाई हो जाती हैं। सिर्फ तुम बच्चें ही जानते यह राधे कृष्ण प्रिन्स-प्रिन्सेज थे। मूल वतन में हैं आत्माएं। सूक्ष्म वतन में ब्रहमा, विष्णु, शंकर हैं। ब्रहमा भी चतुर्भुज, विष्णु भी चतुर्भुज दिखाते हैं। अर्थ कुछ नहीं समझते। भक्ति मार्ग की सामग्री बहुत है। तप जप तप आद बहुत ढेर हैं। तुमको तो अब सिर्फ अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना हैं। और कोई बातनहीं। कितनी नाटक बनाते हैं। कितने ढेर के ढेर चित्र हैं। हैं सब झूठ। यह भी ड्रामा में नूंध है फिर भी वही होगा। तुम बच्चों को शिव बाबा के सिवाय और किसकी याद न रहनी चाहिए। कम से कम आठ घंटा याद रहे तो तुम माला के दाना बन सको। ओम गुडनाईट।